AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (3), Issue (1), January-March 2026 **ISSN: 3048-7951**

छायावादी काव्यांदोलन में आत्मानुभूति का रसवंती प्रवाह

डा.वी.तारा नायर[1]

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18666191
Review: 04/02/2026 **Acceptance: 04/02/2026** **Publication: 17/02/2026**

सार

छायावादी साहित्य में रहस्यवाद, दर्शन और आत्मानुभूति और रहस्यवाद को मुख्य रुप से छायावाद का विषय माना गया है। जिसने हिंदी की कविताओं को दशा और दिशा दोनों देने का कार्य किया है। छायावादी साहित्य को हिंदी का काव्यांदोलन भी कहा गया है। इस दौरान भाषा का स्तर मधुर और आलंकारिक रहा है। भावनात्मक प्रधान भाषा ने मधुरता के रस में अपने को डूबाकर कोमलता का आभास कराया है। स्वतंत्र विचार सिद्धहस्त बन गए। सौंदर्य ने अपनी महत्वपूर्ण छाप छेड़ी। संगीत और अलंकारिकता को भाषा में प्रधानता प्राप्त हुयी। नारी का सौंदर्य अपनी उच्च सीमा पर रहा। सम्मान और श्रद्धा ने उच्चतम स्थान प्राप्त किया। इन सभी बातों को कविताओं में स्थान मिला। संवेदना और आध्यामिकता की बातें जुड़ने लगी। यही वजह है कि काव्यात्मक्ता की प्रभावशालीता ने अपनी ऊँचाईयों को आसमानी पाया। अंग्रेजी और बंगाली भाषाओं का पुरजोर था। पारंपरिक काव्य शैली में परिवर्तन की गुंजाइश महसूस होने लगी। राष्ट्रीयता का असर दिखने लगा। आतंरिक अनुभवों को कवि ने कल्पनाशीलता की तर्ज पर रखकर कविताओं का आधार बनाया। कविताओं को प्रभावसाली बनाने हेतु छायावाद में प्रकृति को मानव जीवन से जोड़ दिया। व्यक्तिगत अनुभवों को भी कविता की विषय समाग्री से जोड़ दिया। छायावाद के चार स्तंभों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, और महादेवी वर्मा। जिस जयशंकर प्रसाद ने दर्शन और इतिहास को कविताओं में विषय बनाया वहीं निराला के स्वतंत्र अस्तित्व, पंतजी के प्रकृति प्रेम और महादेवी वर्मा की संवेदनशील कविताएँ और भावनाएँ यहाँ दिखती है।

बीज शब्द- प्रेम, प्रक्रृति, संवेदना, एकांत, वेदना, भाव सौंदर्य॥---

प्रकृति, प्रेम आत्मानुभूति

छायावाद का युग उथल-पुथल का युग था। राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सभी स्तरों पर दवंद्व, संघर्ष और आंदोलन इस युग की विशेषता रही है। १९१६ से १९३६ तक बीस वर्षो का समय छायावाद युग रहा है। दो महायुद्ध के बीच की हिंदी कविता के रुप में भी छायावाद का अध्ययन किया जा सकता है। स्वाधीनता की चेतना का ही परिणाम है– कल्पना पर अधिक बल। विदेशी शासन के अत्याचारों से उत्पन्न संघर्षमयी परिस्थितियों के विरोध में कवियों की पलायनवादी मनोवृत्ति ने जिस काव्य शैली का सृजन किया उसे छायावाद की संज्ञा दी गयी है। छायावाद की प्रथम कविता का दर्शन हमें प्रसाद्जी के काव्य में मिलता है। कवि अपने समय की वास्तविकताओं, यथार्थ से प्रभावित होकर अपनी रचनाओं में उसकी विशिष्ट प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति

[1] डा.वी.तारा नायर, हिन्दी विभागाध्यक्षा, लोयोला डिग्री कालेज, बन्नेरगट्टा रोड, बैंगलोर-६२, दूरभाष संख्या– 9448329167, Email: vtaranair@gmail.com

देता है और उसकी रचनाएँ ही युग विशेष की मूल प्रवृत्ति को रुपायित करती है। प्रसादजी के छायावादी काव्य में राष्ट्रीय जागरण, सांस्कृतिक जागरण के रुप में ज्यादा आता है।

वसुधा पर ओंस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
ऊषा बटोरती अरुण गात॥

कामायनी एक क्लासिकल कालजयि कृति है जो छायावाद और रहस्यवाद की महाकाव्यात्मक सृष्टि है। प्रसाद जी ने मनु, इड़ा, श्रद्धा को अपनी दार्शनिक मनोवृत्तियों के अनुकूल प्रतीकत्व प्रदान करने में सफल रहे है। जहाँ उन्होंने रहस्योघाटन किया है, वहीं रहस्य से परे आनंदभूमि की भी स्थापना की है। इन्हें आधुनिक बोध और संवेदना के कवि भी कहा जाता है।

प्रसाद की कविता नयी परिकल्पना करती है कविता उनके लिए आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है। उनके लिए प्रेम उदात्त है। सकर्मक,अकर्मक जीवन के बीच तनाव को प्रत्यक्ष करते है। छायावाद में आधुनिक लौकिक चेतना का विरोध भी देखा जा सकता है। नयी छायावादी काव्यधारा का एक आध्यात्मिक पक्ष भी है मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय है। प्रसाद के कविता कामायनी के मनु के भीतर की उद्धिग्नता है वह आधुनिक मन से प्रभावित है...

“दु:ख का गहन पाठ पढ़कर
अब सहानुभूति समझते थे
नीरवता की गहराई में
मग्न अकेले रहते थे।“

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने छायावाद में नव या नूतन के प्रति अभूतपूर्व ललक पैदा किया है। निराला जी की रचना शैली ने खड़ी बोली का विकास किया और उसको न्यी काव्यधारा भाषा के रुप में प्रस्तुत किया है। निराला की जूही की कली एक स्वछंन्दतावाद कविता के साथ छायावाद का निचोड़ रही है। आध्यात्म फल कविता में हिन्दी का अभिनव प्रयोग मिलता है।

जब कड़ी मारें पड़ी, दिल हिल गया
पर कभी चूँ भी न कर पाया यहाँ
मुक्ति को तब युक्ति से मिल खिल गया
भाव जिसका चाव है छाया यहाँ॥

निराला के काव्य में गीतों का अपार भंडार मिलता है। राम की शक्तिपूजा देश, काल, समाज का संदर्भ है। उसे मिथ्य, बिंब, प्रतीक, छंद, अलंकार से सजाया गया है। इस कविता को भारत के स्वाधीनता संग्राम की रणनीति की कविता भी मानी जा सकती है। बलिदान की भावना से शक्ति राम पर प्रसन्न हो गयी और उसने राम का हाथ थाम कर कहा- *“होगी विजय होगी जय हे पुरुषोतम नवीन।“* शक्ति की मौलिक कल्पना का यही अर्थ है कि

मुक्तिकामी नेतृत्व को भारत की जनशक्ति की आराधना करके उसे अपने पक्ष में करना होगा। जनशक्ति जिस नेतृत्व के पक्ष में हो जाएगी, उसकी विजय होने में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं। राम की शक्तिपूजा विधागत नवीनता के साथ आध्यात्मगत संरचनात्मक सौंदर्य का अनूठा उदाहरण है। यह वर्तमान और विगत का जीवनबिंब है।

महादेवी वर्मा छायावाद की एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर है जहाँ संवेदनशील कवियों की तरह ही महादेवी ने भी अपनी रचनाशीलता का प्रयोग किया है। वे भी युग विशेष की मूल प्रवृत्ति को रुपायित करने वाली एक कवियत्रि ही है। उस अलौकिक प्रिय से मिलने की इच्छा ने उन्हें उद्धेलित किया है। रहस्य के आवरण में इसकी अभिव्यक्ति हुयी है। उनकी कविता सूक्ष्मता को प्रतिष्ठित करती है। सौंदर्य से सत्य की यात्रा प्रकृति और मानव को आकृष्ट करता है।

"साम्राज्य मुझे दे डाला,उस चितवन ने पीड़ा का....रात सी नीरव मेरी व्यथा, तुम सी अगम मेरी कहानी।"

बौद्ध धर्म के अध्य्यन और उसके प्रति रुझान ने भी महादेवी वर्मा के वेदना भाव के लिए अध्यात्मिक भावभूमि तैयार की और उनके दुख को भी आध्यात्मिक स्तर पर अपनाया। वेदना की अधिकता ने आध्यात्म् का आवरण लेने को बाध्य किया।...

"विजन वन में बिखरा कर राग ..लुभाओ इसे न मुग्ध वसंत/विरागी है मेरा एकांत।"

सांध्यगीत, दीपशिखा जैसी कृतियाँ प्रत्यक्षीकरण लेखन के आधारस्तंभ है। चिंतन के क्षेत्र का अदवैतवाद भावना के क्षेत्र का रहस्यवाद है। महादेवी वर्मा स्वयं कहती है कि- "हमारे मूर्त और अमूर्त जगत एक-दूसरे से मिले हुए है कि एक यथार्थदर्शी दूसरे को रहस्यद्दष्टा बनकर ही पूर्णता बनकर पाता है। नारी होना तो इस रहस्यभाव को और भी गहन कर देता है।.... जब असीम से हो जाएगा। मेरी लघु सीमा का मेल॥ आत्मा परमात्मा के रागात्मक संबंध की व्याख्या। महादेवी वर्मा एक रहस्यवादी कवि के रुप में अद्वैतवाद से बँध कर नहीं चलती बल्कि प्रियतम से एकाकार होना चाहती है।... तू मुझमें फिर परिचय क्या?..... काया छाया में रहस्यमय!/प्रेयसी-प्रियतम का अभिनय क्या!! महादेवी वर्मा की जीवन दृष्टि आध्यात्मिक है। उन्होनें काव्य को सौंदर्य-सज्जित करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग किया है, जिसमें आध्यात्मिक प्रतीकों में रहस्यात्मकता का पुट भी अनायास आ जाता है।.......

"करुणामय को भाता है? तम के परदों में आना... हे नभ की दिपावलियों तुम पल-भर में बुझ जाना।"

महादेवी वर्मा का जीवन एक सतत साधना के रुप काव्य पट्ल पर चित्रित हुआ है। महादेवी वर्मा का सर्वाधिकतम प्रिय रहा है दीपक। उनका दार्शनिक चिंतन इसमें परिलक्षित होता है कि प्रणय के क्षेत्र में आत्मोसर्ग को वरीयता देती है। यहाँ प्रतिनिधि प्रतीकों का विश्लेषण मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व का अभिज्ञान बन जाता है। महादेवी वर्मा का पूरा जीवन ही विरह का जलजात है। वह कमल सी निर्लिप्त रहती है जो उसके साधक व्यक्तित्व की

अभिव्यंजना करता है। यात्री का प्रयोग भी उअनकी कविता में है जहाँ दर्शनवाद की प्रमुखता भी दिखायी पड़ती है। पथिक की राह में शूल और झंझा प्रतीक के रुप में दिखलायी पड़ते है। आध्यात्मिक जीवन के तहत जीव का परमात्मा से संबंध स्थापित न कर पाना मतलब माया में उलझ कर रहना बताया है। ..... *"टूट गया वह दर्पण निर्मम/उसमें हँस दी मेरी छाया..... ।"*

छायावादी काव्यधारा को एक नयी गति देने में सुमित्रानंदन पंत की अहम भूमिका रही है। छायावाद का प्रमुख गुण व्यक्तिवाद पर टिकी आत्मानुभूति है। अपनी आशा-निराशा, प्रेम-विरह, सौंदर्यानुभूति के अनेक मनोरम चित्र इस युग के कवियों में मिलते है। पंत के काव्य में प्रकृति के अगाध प्रेम और कल्पना की ऊँची उड़ान दिखायी पड़ती है। पंत के यहाँ प्रकृति निर्जीव जड़वस्तु होकर एक साकार और सजीव सत्ता के रुप में उपस्थित हुयी है। उसका एक एक उपकरण कवि मन में जिज्ञासा उत्पन्न करता है।

"प्रथम रश्मि का आना रंगिणी !
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ- कहाँ हे बाल विहँगनी
पाया तूने यह गाना !!

पंत ने गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन के साथ आध्यात्मिक मान्यताऐं व्यक्त की है। पंत की छायावादी कविता प्रणय वेदना के अनेक चित्रों कों खींचता है। नारी सौंदर्य और गुणों का गान करते हुए अंत में कवि उसे देवी/माँ/सहचरी/प्राण कहकर भी संबोधित करते है। कवि ने छायावाद की लाक्षिणक शैली की अभिव्यक्ति की है

"आज मैं सब भाँति सुख-संपन्न हूँ, वेदना के इस मनोरम विपिन में
विजय छाया में दृगों की, योग सी, विचरती है आज मेरी वेदना॥"

पंत ने साम्यवाद और भौतिकवाद कों अपनी सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मवाद दर्शन बोध की परिधि में ही स्वीकार किया है।

मनुष्यत्व का तत्व सिखाता निश्चय हमको गाँधीवाद,
सामूहिक जीवन-विकास की साम्य योजना है अविवाद॥

कृषक समाज के उद्धार को सदभाव पूर्ण कल्पना मानते हुए सामुहिक कृषि द्वारा उसके कायाकल्प में विश्वास को प्रकट किया है। युगांत की श्रमजीवी कविता में पंत ने सर्वहारा वर्ग का अत्यंत भव्य और गौरवपूर्ण वर्णन किया है।

"लोक क्रांति का अग्रदूत वरवीर जनावृत
नव्य सभ्यता का उन्नायक, शासक, शोषित!" ......

वस्तुत: युगवाणी में पंत ने अपने छायावादी संस्कारों से सायास मुक्त करने का प्रयास करते हुए *'ग्राम्या"* की रचना के लिए तैयार किया जिसमें सामाजिक, एतिहासिक महत्व को दर्शाया है। अरविंद दर्शन से प्रभावित होकर

पंत की चेतना अपने प्रथम चरण की चेतना से जुड़ गयी। पंत को भौतिकता और आध्यात्मिकता के समन्यवय से एक ठोस आधार की प्राप्ति हुयी। ये आध्यात्मिकता को जिसमें ब्रम्ह का परिपाशर्व (अंग) स्वीकार कर भौतिकता और आध्यात्मिकता को मानव कल्याण के लिए आवश्यक सिद्ध कर दिया। इसके अंतर्गत वे गाँधीवाद में मनुष्य़त्व का तत्व और साम्यवाद में सामूहिक विकास योजना देखते है।

"आत्मवाद पर हँसते हो भौतिकता का रट नाम ?
मानवता की मूर्ति गढ़ोगे क्या सँवार कर चाम ?"

पंत ने आत्मसत्य और वस्तुसत्य के समन्यवय पर बल दिया -"

"वही सत्य कर सकता मानव जीवन का परिचालन
औ' अध्यात्मवाद हो जिसका हृदय गंभीर चिरंतन।

अपने छायावादी काव्य में पंत जी ने अंतर्बाह्य विशेषताओं का कुशलता से काव्य में समावेश किया है। पंत ने अपने काव्य में वर्तनी में परिवर्तन कर नवीन शब्दों का निर्माण किया है पंत के दर्शन काव्य में नव मानवतावाद का विकास किया है। वसुदेव कुटुंबकम और सर्वसंतु निराभय उनका आदर्श रहा है।

"मैं शाश्वत नि:सीम का गायक और सृजक रहा तो साध्य: क्षणिक का भी जनक हूँ।"

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने दिवेदी काल की क्रमश: विस्तृत और परिष्कृत होती धारा छायावाद कही जाने धारा तथा स्वछंदता को लेकर चलती धारा के अंतर्गत परिवर्तन की लालसा व्यक्त करने वाली शाखा का उल्लेखनीय वर्णन हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिक कालखंड कविता में खड़ी बोली की मुख्य धारा को चिन्हित करते हुए किया है। यदि दिनकर कवि की बात कही जाए तो जब इन्होंने लिखना शुरु कर दिया तो छायावाद रुप ग्रहण कर चुका था। दिनक्रर की उमंग और मस्ती में सामाजिक मंगलाकांक्षा की प्रधानता रही है। दिनकर अपने ढग के अलग कवि थे। जब छायावाद में प्रथम दिव्तीय़ उन्मेषी कवि आते रहे तो मानवतावाद का आदर्श थोड़ा अस्पष्ट सा होने लगा, जबकि दिनकर में वह आदर्श पूरे जोश पर था। दिनकर की राष्ट्रीयताकी भावना से ओत-प्रोत कविता भारतीय जनता की आकुलता को आत्मसात करने में स्फूटित हुयी। वे जनता के मन में उदात्त भावना का संचार करना चाहते थे।

"प्रभु! तब पावन नील गगन-तल
विदलित अमित निरीह निबल दल
मिटे राष्ट्र उजड़े दरिद्र-जन
आह! सभ्यता आज कर रही
असहायों का शोणित-शोषण॥"......

पर दिनकर सिर्फ राष्ट्रवादी कवि ही नहीं बल्कि अलग अलग भावधारित कविताएँ भी लिखते है। सौदर्य और प्रेम की अभिव्यक्ति कवि के मूल स्वभाव के अनुकूल थी। उर्वशी काव्य एक मिथकीय आख्यान को लेकर पुर्नरचना

काव्य है। पुरुरवा और उर्वशी के प्रेम की गाथा, पर जब दिनकर ने श्री अरविंद की उर्वशी पढ़ी तो उन्हें आध्यात्मिक पक्ष समझ में आया। उर्वशी की रचना का समय वह है जब ललित कला ,उपयोगी कला से दूर हो गयी। उर्वशी धर्म नहीं, प्रेम की अतीन्द्रियता का आख्यान् है और यही आख्यान उसका आध्यात्मिक पक्ष है। समय और समाज ने दिनकर की कविता पर असर डाला था।

"कविता न गर्जन है,
न सूक्ति है वीर है न घोष है,
न ही वाणी, खरचिंतको की न पूर्ति है
न माँग है अर्थ नहीं काव्य योग है।"......

समय के साथ मनुष्य और कविता दोनों बदल रही है। दिनकर अपने संस्कारों से लड़ रहे थे। वे समाज के कोलाहल से अपने मन की ओर मुड़ रहे थे। उन्नीसवीं सदी में देश के विभिन्न हिस्सों मं जो पुरानी रुढियाँ, अंधविश्वास के खिलाफ सुधार आंदोलन चल रहे थे उसका तीव्र असर कविताओं पर पड़ना अनिवार्य हो गया था। प्रेम और श्रृंगार का आकर्षण तो था ही इस कवि में। छायावाद के परवर्ती काल में छायावादोत्तरी प्रवृति के ये सशक्त कवि बन गए।

छायावाद काल्पनिकता है प्रकृति मूलक है सूक्ष्मता का विद्रोह है भावना की प्रधानता है। रहस्यवाद चिंतन है ज्ञान और बुद्धितत्व की प्रधानता है इसकी प्रकृति दार्शनिक है, परमात्मा का आभास कण कण में रहस्यवाद है। छायावादी काव्य में आध्यात्मिकता मूलत; दिखायी देती है इसी अंतर्निहित आध्यात्मिकता के कारण छायावादी कविता अंग्रेजी स्वछंदतावाद से पृथक हो गयी और भारतीय आध्यात्मिक चिंतन की लंबी परंपरा से जुड़ी दिखायी पड़ी। इसी आध्यात्मिकता का कारण बना रहस्यवाद और उसकी प्रतीक पद्धति ने रहस्यवाद भावनाओं के प्रस्फूटन का काम किया।

संदर्भ ग्रंथ सूचि-

- गीतांजलि -2018 -पेज न. 240
- मेहता -नरेश -1962 -पृष्ठ संख्या -120